सोनी सलोनी
हिन्दी विभाग
बी॰एस॰ कॉलेज
समस्तीपुर

हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम खंड
(B A Hons Part I)
प्रथम पत्र

पाठ्य विषय: प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

1. शोषित और शोषक वर्ग की अवधारणा: — प्रगतिवादी कवि अभिजात्य वर्ग के उन चंद पूंजीपतियों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं जो अधिसंख्यक शोषित वर्ग के कृषक और श्रमिक वर्ग का शोषण करते हैं। समाज में इन दो वर्गों की स्थिति को ये अपरिहार्य मानते हैं किंतु शोषक वर्ग के विनाश की कामना भी ये अपनी कविताओं में व्यक्त करते हैं। शोषित वर्ग को ये 'सर्वहारा' नाम से भी पुकारते हैं।

2. सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति: — प्रगतिवादी कवियों की कृषक मजदूर वर्ग के प्रति सहानुभूति सदा ही बनी रहती है। पाठकों में इस करुणा-दया के भाव का संचार करने के लिए ये उनकी दयनीय अवस्था का अंकन करते हैं। निराला की 'भिक्षुक' कविता में 'दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता' तथा 'वह तोड़ती पत्थर' में मजदूरनी की दारुण एवं दयनीय अवस्था का वर्णन किया गया है।

3. वर्ग वैषम्य का अंकन: — शोषक पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बीच कितनी चौड़ी खाई है और इसे पार

(2)

कर पाना किसी के लिए भी अत्यन्त कठिन है। वर्गों के बीच की इस विषमता को चित्रित करना ही इन कवियों का उद्देश्य है। पूँजीपतियों और दुर्बल दलित वर्ग के बीच के इस बढ़ते वैषम्य को दिनकर ने भी व्यक्त किया था।

4. धर्म ईश्वर आदि का विरोध — प्रगतिवादी कवि धर्म, ईश्वर, परलोक आदि में विश्वास नहीं रखते। वे मानते हैं कि शोषक वर्ग इन्हीं धार्मिक धारणाओं में लाकर, गरीब किसान-मजदूरों का शोषण करते हैं। पंत जी ने ताज कविता में ऐसी ही भावना व्यक्त की है।

5. अंधविश्वासों और रूढ़ियों का खण्डन: — आगे बढ़ने के लिए प्रगतिवादी कवियों के लिए यह वैसे भी अनिवार्य था कि वे प्राचीन रूढ़ियों और थोथे अंधविश्वासों का जमकर विरोध करते। इसलिए पुरानी रूढ़ियों, परंपराओं के विरुद्ध अपना स्वर वे बुलंद करते हैं।

6. मार्क्स और रूस का स्तुतिगान: — प्रगतिवादी चूंकि मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों पर आधारित हैं, अतः इन कवियों ने मार्क्स और लेनिन की स्तुति के साथ साम्यवादी रूस की प्रशंसा में कविताएँ लिखी हैं। नरेन्द्र शर्मा साम्यवादी लाल झंडे को फहराने वाली रूस की प्रशंसा में लिखते हैं —

"लाल रूस है ढाल साथियों
सब मजदूर किसानों की"

→

7 धरती से जुड़ाव : — प्रगतिवादी कवि गगन विहारी न होकर खुरदरी धरती पर चलने वाले अंचलों में विश्वास रखने वाले है। गगन में ताकने वालों को वो धरतीवासी की समस्याओं से जूझने का आह्वान करते हैं।

'ताक रहे हो गगन ?
मृत्यु नीलिमा गगन? निस्पन्द शून्य निर्जन निःस्वन
देखो भू को, स्वर्गिक भू को, मानव पुण्य प्रसू को'

8. नारी का यथार्थ चित्रण — पूंजीवादी समाज में नारी का भी शोषण होता है। उसके लिए तो नारीमात्र वासना पूर्ति का साधन है। इस लाचारी भरी जिंदगी के प्रति 'अंचल' सहानुभूति रखते करते हैं —

'इन खलिहानों में गूंज रही
किन अपमानों की लाचारी
हिलती हड्डी के ढांचों से
पिटती देखी घर की नारी ..'

नारी को मुक्त करने हेतु पंत भी भी कहते हैं —

'मुक्त करो नारी को
युग युग की कारा से बंदिनी नारी को'

9. समता के सपने मानवता ने बुने; — मानवता के बुनकर ये प्रगतिवादी कवि वर्गविहीन समतामूलक समाज के सपने अपनी कविता में सजाते हैं। हर जाति

वर्ग और धर्म का व्यक्ति उसके लिए समान है।
कवि नरेन्द्र शर्मा कहते हैं —

'जाने कब तक घाव भरेंगे
इस घायल मानवता के?
जाने कब तक सच्चे होंगे
सपने सब की समता के?

10 आडंबरहीन कला विधान :— प्रगतिवादी कवि अपनी बात को बिना आडंबर के सीधी-सरल भाषा में व्यक्त करने में विश्वास रखते हैं। न वे भाषा की बनावट का, न अलंकारों से सजाने के फेर में पड़ते हैं और न छंदों के बंधनों में अपने को जकड़ते हैं। जीवन के कटु संघर्षों की छवि को नागार्जुन आडंबरहीन भाषा में यूँ सहज अभिव्यक्ति दे देते हैं —

"पैदा हुआ था मैं,
दीन हीन अपठित किसी कृषक कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का आसव ठेठ
बचपन से।
कवि! मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में
मेरा क्षुद्र व्यक्तित्व
रुद्ध है, सीमित है
आटा दाल नमक लकड़ी की जुगाड़ी में।